Vol 6 Issue 8 September 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor :4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

Indian Streams Research Journal

आदिवासी हिन्दी उपन्यासों में पर्व, त्योंहार, मेलों का चित्रण।

प्रा. डॉ. सविता चौधरी
किसान महाविद्यालय, पारोला जि जलगाव.

सारांशः

भारतीय संस्कृति प्राचीनकाल से आज तक विकसित, प्रचारित और प्रसारित रहीं है। इस संस्कृति में मनाये जानेवाले त्योंहारों के अवसरों पर मस्ती का अक्षयस्रोत देह में फौवारे की तरह प्रवाहित होता है। त्योहारों से आध्यात्मिक सरसता बलवत होती है। त्योंहार के लिए सामान्यतः पर्व शब्द का भी प्रयोग होता हैं। पर्व शब्द का संबंध शुभ मुहूर्तों, लग्नों अथवा क्षणों के योग से है। मिलन के उन मुहूर्तों में अथवा संक्रांतियों में धर्म,पुण्य अथवा दान का विशेष महत्व माना गया है। पर्वों,त्योंहारों और मेलों से आदमी उत्साह तथा उर्जा पाता है।

आदिवासी वर्षभर पर्व और त्योंहार मनाते है। शायद ही कोई माह किसी उत्सव या पर्व के बिना रहता है कभी देवता का त्योंहार होता है तो कभी अन्न या धरती अथवा कभी वर्षा की आकांक्षा से त्योंहार मनाए जाते हैं। कभी–कभी अच्छी फसल की खुशी में कभी नयी फसल के आने की खुशी में उत्सव मनाया जाता है। गोंड जनजाति में करमा, चैती,नयाखाई, हरैली और छैला आदि पर्व प्रचलित हैं।

इसी प्रकार मुंडाओं के आठ पर्व मागे, फागूर, सरहुल, हीनता, कीलमसिंग, बोगा, सोहराई,सोसाबोंगे और बडाणनी। आदिवासियों की नारियाँ 'जनी शिकार' महापर्व मनाती हैं। दरअसल पर्व तो आदिवासी से इतर जातियाँ भी मनाती है लेकिन गोंडों में करमा पर्व का विशेष महत्व है।

अन्य जातियों के समान आदिवासी जनजातियाँ भी होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन आदि मनाते है, तो दूसरी और अपने पारंपरिक त्योंहार आखातीज, होवण माता की चलावणी, सावण माता की जातर, दिवासा, नवई, नषणी, भगोरिया, गाय, गोहरी, गल,गढ, शीतलामाता आदि पारंपरिक त्योहारों को मनाते है।

अंत में कहां जा सकता है कि आदिवासी समाज के मेले सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रायः देवी देवताओं के नाम पर हर वर्ष विशेष अवसर पर मेले लगते है। इन मेलों में सांस्कृतिक आदान प्रदान के साथ– साथ वस्तुओं का क्रय विक्रय भी होता है।

इन मेलों में भिल्लोरी, पावरी लोकगीतों, लोकनृत्यों की अनोखी झलक देखने को मिलती है। अनेक सांस्कृतिक पहलुओं की झलके भी नजर आती है। हर वर्ष परंपरागत ढंग से मेले सम्पन्न होने के बावजूद भी वे नए लगते है। इस दृष्टि से जीवन के प्रतिबिंब ये मेले हर्षोल्लास के प्रतिक माने जाते है। मेलों के आगमन से नीरस तथा भयग्रस्त, अभावग्रस्त जीवन में मधुरता एवं सरसता का संचार होता है। आदिवासी समाज में मेलों, पर्वों के आगमन से नई उम्मीद का निर्माण होता है साथ ही साथ आदिवासी संस्कृति की झलक भी मिलती हैं।

भारतीय संस्कृति प्राचीनकाल से आज तक विकसित, प्रचारित और प्रसारित रहीं है। इस संस्कृति में मनाये जानेवाले त्योंहारों के अवसरों पर मस्ती का अक्षयस्रोत देह में फौवारे की तरह प्रवाहित होता है। त्योहारों से आध्यात्मिक सरसता बलवत होती है। त्योंहार के लिए सामान्यतः पर्व शब्द का भी प्रयोग होता हैं। पर्व शब्द का संबंध शुभ मुहूर्तों, लग्नों अथवा क्षणों के योग से है। मिलन के उन मुहूर्तों में अथवा संक्रांतियों में धर्म,पुण्य अथवा दान का विशेष महत्व माना गया है।''[1] पर्वों,त्योंहारों और मेलों से आदमी उत्साह तथा उर्जा पाता है। संस्कृति को दोहराता हैं। शंकरलाल मस्करा लिखते है–''भारतीय संस्कृति को बल देने के लिए हम समय–समय पर त्योंहार मनाते हैं। देखा जाय तो हमारे तीज, त्योहार सार्थक ही नहीं वैज्ञानिक भी हैं। सभी समयानुकूल प्रकृति की शुभाशंसा में यज्ञ की गरिमा लिए हुए। अनादीकाल से हमारे सारे तीज, त्योंहारवैसे ही हर्षोल्लास के साथ मनाते आ रहे है और इन त्योंहारों में नए–नए त्योंहार जुडते जाते है।''[2] आदिवासी वर्षभर पर्व और त्योंहार मनाते है। शायद ही कोई माह किसी उत्सव या पर्व के बिना रहता है कभी देवता का त्योंहार होता है तो कभी अन्न या धरती अथवा कभी वर्षा की आकांक्षा से त्योंहार मनाए जाते हैं। कभी–कभी अच्छी फसल की खुशी में कभी नयी फसल के आने की खुशी में उत्सव मनाया जाता है। गोंड जनजाति में करमा, चैती,नयाखाई, हरैली और छैला आदि पर्व प्रचलित हैं। चैती को हम लें– चैत की फसले काटकर धरती माता की पूजा की जाती है। हरैली में वन देवता से जंगल हरा भरा रखने की प्रार्थना होती हैं।

Volume - 6 | Issue - 8 | September - 2016

इसी प्रकार मुंडाओं के आठ पर्व मागे, फागूर, सरहुल, हीनता, कीलमसिंग, बोगा, सोहराई,सोसाबोंगे और बडाणनी। आदिवासियों की नारियाँ 'जनी शिकार' महापर्व मनाती हैं। दरअसल पर्व तो आदिवासी से इतर जातियाँ भी मनाती है लेकिन गोंडों में करमा पर्व का विशेष महत्व है उसी का एक उदा दृष्टव्य हैं। इसमें गाया जाने वाला गीत–

''मिट्टी लइले साबुन लइले
मलमल काया धोई रे
अंत कपट का दाग छूट्या, धोबी
फिर फिर जाया रे
ओमुरलीवारे सरना लिहारे
ओ किसना मुरलीवारे।''[3]

इसके प्रस्तुति का जो ढंग है वह बिल्कुल अन्य पर्वों को मानने वाली प्रजातियों से भिन्न हैं।

अन्य जातियों के समान आदिवासी जनजातियाँ भी होली, दिवाली, दशहरा, रक्षाबंधन आदि मनाते है, तो दूसरी और अपने पारंपरिक त्योंहार आखातीज, होवण माता की चलावणी, सावण माता की जातर, दिवासा, नवई, नषणी, भगोरिया, गाय, गोहरी, गल,गढ, शीतलामाता आदि पारंपरिक त्योहारों को मनाते है।'जंगल के फूल' उपन्यास में कोरता पांडुम, कारा, मरेगा, दीवारी आदि त्योहारों का वर्णन विस्तार से किया है।कोरता,पांडुम गोंड आदिवासियों का विशेष त्योंहार हैं। दशहरा के आस पास बोया गया धान या काला धान पकना शुरु होता है। गाँव के जिस व्यक्ति का धान पहले पकना शुरु होता है वह गाँव के गायता को इसकी सूचना देता है।सूचना के बाद धान के लिए गायता और गुनिया मिलकर 'मानाबुझा' करते है। जिस पहले व्यक्ति का धान पक गया होता है, वह कुछ धान गायता के यहाँ लाता है।इस धान और पकने वाले सभी धानों की कुशलता के लिए उसकी अर्चना की जाती है। अवस्थीजी लिखते है ''कोरता पांडुम का परब आया। कोरता पांडुम की रात नाच गाने की होती है। जवान जोडों को तब अपने मन की साथ पूरी करने का समय मिलता हैं।''[4]

'डूब' के पानीपुरा में तीज त्योंहारों पर कुँआ पूजन का नेग पूरा किया जाता है।
'सुराज' उपन्यास में धरमु प्रधान का बेटा झन्नू शंखी को शहर मेला दिखाने के लिए लेकर जाता है।
'जंगल के आसपास' उपन्यास में यह तय किया गया है कि ''एक मास बाद जो वसंत पंचमी का त्योंहार आ रहा हैं।उसी पर एक बार करियाला पहरुआ गाँव में करवाया जाए ओर नई नाटिका भी उसी अवसर पर खेली जाए।''[5]

'जंगल जहाँ शुरू होता है' में रामनवमी के दिन थरुहट का सबसे बडा मेला सहोदरा देवी का मेला लगता है। पारवतीॉ कुमार से कहता है''इलाका भी देख लेंगे और रामनवमी का दिन है, सहोदरा माई की पूजा भी करेंगे।''[6] जंगल में काली धीरे–धीरे मंदिर की सीढियाँ चढता है। आश्रम के नाम पर यहीं है यहाँ। कभी एक मूर्ति हुआ करती थी राधाकृष्ण की। दूर–दूर से लोग पूजा करने आते थे। जन्माष्टमी को रात रातभर गहमागहमी रहती। अब इस खंडहर में कोई नहीं आता। खंडहर की दर की दीवारों से पौधे निकल आए हैं। लोगों की भीड को जाता देखकर कुमारॉ पारवती से पूछता है कि इतने लोग कहाँ जा रहे है, तो पारवती कहता है ''सर वो एक मेला है न सहोदरा था सुभद्दरा क्या तो कहते है। थरुहट का सबसे बडा मेला वहीं हैं। मेलवा में तनी चली न जाइए हुजूर, हुवई सभ भेटा जाएगा डाकू भी है।''[7]

निष्कर्षतः कहां जा सकता है कि आदिवासी समाज के मेले सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। प्रायः देवी देवताओं के नाम पर हर वर्ष विशेष अवसर पर मेले लगते है। इन मेलों में सांस्कृतिक आदान प्रदान के साथ– साथ वस्तुओं का क्रय विक्रय भी होता है। इन मेलों में भिल्लोरी, पावरी लोकगीतों, लोकनृत्यों की अनोखी झलक देखने को मिलती है। अनेक सांस्कृतिक पहलुओं की झलके भी नजर आती है। हर वर्ष परंपरागत ढंग से मेले सम्पन्न होने के बावजूद भी वे नए लगते है। इस दृष्टि से जीवन के प्रतिबिंब ये मेले हर्षोल्लास के प्रतिक माने जाते है। मेलों के आगमन से नीरस तथा भयग्रस्त, अभावग्रस्त जीवन में मधुरता एवं सरसता का संचार होता है। आदिवासी समाज में मेलों, पर्वों के आगमन से नई उम्मीद का निर्माण होता है साथ ही साथ आदिवासी संस्कृति की झलक भी मिलती हैं।

संदर्भ –

1) डॉ जयनारायण कौशिक : हमारे तीज,त्योंहार और मेले पृ 2
2) प्रकाश नारायण नटाणी : हमारे तीज, त्योंहार और उत्सव पृ5–6
3) डॉ शिवतोष दास : भारत की जनजातियाँ पृ 183
4) राजेंद्र अवस्थी : जंगल के फूल पृ 192
5) राकेश वत्स :जंगल के आसपास पृ 209
6) संजीव : जंगल जहाँ शुरु होता है पृ 128
7) वहीं पृ 13

प्रा. डॉ. सविता चौधरी
किसान महाविद्यालय, पारोला जि जलगाव.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org